पाठशाला
भीतर और बाहर
पाठकों के विचार

जेण्डर और बच्चे, विजय प्रकाश जैन, अंक 10

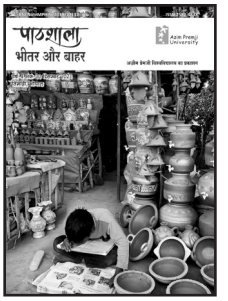

शिक्षा के भेदभावपूर्ण होने के कारण बच्चों में प्राथमिक स्तर से ही जेण्डर भेदभाव की मानसिकता निर्मित हो जाती है जिसके जीवनपर्यन्त बने रहने की सम्भावना रहती है। यही मानसिकता कहीं-न-कहीं व्यक्ति के विकास में रोड़ा बनती है। शिक्षण प्रणाली में इस मुद्दे पर, विशेषकर प्रशिक्षकों के माध्यम से, शिक्षकों को प्रशिक्षित भी किया जा रहा है। एक अच्छे शिक्षक को अपनी शिक्षण शैली में इसे विशेष महत्त्व देकर बातचीत एवं तर्कसंगत विचारों द्वारा जेण्डर भेदभाव की मानसिकता को कम करने में अपना योगदान देना चाहिए ताकि एक अच्छे समाज का निर्माण हो सके।

श्रीमती उमा मालवी, माध्यमिक शिक्षक, खामखेड़ा, ज़िला भोपाल, मध्य प्रदेश

शुरुआती कक्षाओं में कहानी शिक्षण, संध्या पाण्डेय, अंक 13

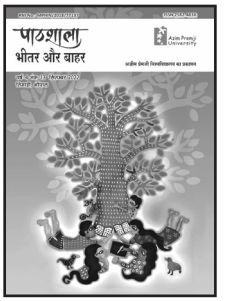

यह अंक शीतकालीन आवासीय कैम्प, विदिशा में पढ़ने को मिला। अंक में संध्या पाण्डेय के आलेख को विस्तार से पढ़ा। मेरा मानना है कि कहानी अपने विचारों को सरलता और रोचकता से प्रस्तुत करती है। शुरुआती कक्षाओं में कहानी द्वारा शिक्षण करना आसान लगता है, पर इसको इतना भी आसान नहीं कहा जा सकता क्योंकि हम कहानी का सार बच्चे तक पहुँचा भी पा रहे हैं या नहीं, यह जान पाना ज़रा मुश्किल रहता है। अपेक्षा यह है कि कहानी के द्वारा शिक्षण में बच्चे कहानी सुनते-सुनते कही गई बातों का अपने दिमाग़ में चित्रांकन कर पाएँ। कहानी में उपयोग की जाने वाली भाषा व शब्द, सरल और बच्चों के परिवेश से जुड़े हों।

आभा जैन, प्राथमिक विद्यालय, सिलेरा, ज़िला सागर, मध्य प्रदेश

कक्षा संचालन : चुनौतियाँ और चुनाव, मीनू पालीवाल, अंक 14

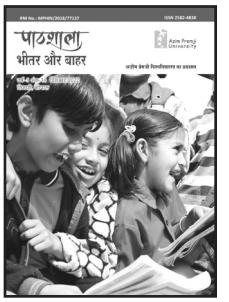

यह लेख पढ़ा, समझ में आया कि वाक़ई सभी शिक्षक इन चुनौतियों से गुज़रकर ही अनुभवी शिक्षक बनते हैं। यह लेखिका का शिक्षा के क्षेत्र में शुरुआती दौर का अनुभव मालूम पड़ता है। किसी शिक्षक ने भले ही विषय के रूप में बाल मनोविज्ञान न पढ़ा हो, पर बच्चों को पढ़ते-पढ़ते वह बाल मनोवैज्ञानिक बन ही जाता है। लेखिका ने कक्षा-कक्ष का अनुभव साझा किया है। बच्चों को चुप कराने पर कक्षा 2 की लड़की ने 'तू चुप!' बोलकर शिक्षिका

को ही चुप होने पर मजबूर कर दिया। भले ही शिक्षिका उस समय कमरे से बाहर चली गईं, लेकिन बाद में शान्त मन से उस विषय पर सोचने से शिक्षिका के मन में कई प्रश्न उभरे। मसलन, छात्रा के 'तू चुप!' बोलने के बाद कक्षा में सन्नाटा क्यों छाया? क्या बच्चों को लगा कि अब इस बच्ची को मार पड़ेगी? या उन्हें भी उसका इस तरह बात करना अच्छा नहीं लगा।

"क्या मैंने सचमुच बच्चों से बहुत ख़राब तरीक़े से शान्त हो जाने को कहा? क्या वह बच्ची मुझे अपने दोस्त जैसा ही समझ रही थी? या फिर उसके घर में इसी तरह से बात होती है?" वास्तव में ऐसी परिस्थितियाँ और प्रश्न ही किसी व्यक्ति को एक सोचने वाले शिक्षक में परिवर्तित करते हैं, और यहीं से आरम्भ होती है शिक्षक की बच्चे के मनोविज्ञान को समझने की यात्रा।

एक समय ऐसा आता है जब इससे भी बड़ी या बड़ों की भाषा में 'अशिष्ट' कही जाने वाली बात बच्चा कह देता है, लेकिन तब शिक्षक न तो स्तब्ध होता है न ही उसे कक्षा से बाहर जाना पड़ता है। इसके विपरीत, उसके चेहरे पर मुस्कान छा जाती है और मिल जाता है उसे कक्षा में बातचीत का ज़रिया। तब यह चुनौती, चुनौती नहीं लगती, बल्कि यह बच्चे के दिल तक पहुँचने का एक अवसर होता है। यह बात मैं अपने ढाई दशक के अनुभव के बाद कह पा रही हूँ, क्योंकि मैं भी ऐसे कई अनुभवों से गुज़र चुकी हूँ।

अनीता ध्यानी, राजकीय प्राथमिक विद्यालय देवराना, विशेष क्षेत्र यमकेश्वर, जनपद पौड़ी गढ़वाल, उत्तराखंड

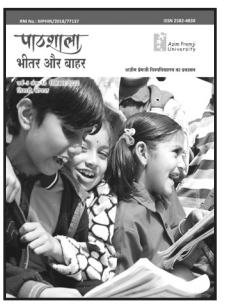

यह लेख पढ़ने में बेहद प्रभावी व जीवन्त लगता है। मैं यह बात इसलिए कह रहा हूँ कि इस लेख को पढ़ते वक़्त मुझे ख़ुद का वो दौर याद आ गया, जब मैं शिक्षा के क्षेत्र में शुरुआती क़दम ले रहा था। उस दौर में बच्चों के साथ कार्य करते समय लेख में उल्लिखित चुनौतियों से प्रतिदिन रूबरू होता था। शिक्षा के क्षेत्र में कार्य करने वाले प्रत्येक व्यक्ति को यह लेख हमेशा उतना ही जीवन्त व प्रभावी लगेगा जितना मुझे लगा। हाँ, यह ज़रूर है कि शिक्षा के क्षेत्र से जुड़े उस व्यक्ति ने बच्चों के साथ कक्षा शिक्षण किया हो, क्योंकि जिस व्यक्ति ने बच्चों के साथ कक्षा शिक्षण नहीं किया, वह लेख में कही गई बातों, चुनौतियों, तथ्यों व प्रयासों के साथ तादात्म्य ही नहीं बिठा पाएगा। इसलिए मुझे लगता है कि इस लेख को पढ़ने से ज़्यादा महसूस करने की ज़रूरत है।

इसमें कोई दो राय नहीं कि प्राथमिक स्तर पर बच्चों के साथ कार्य करना आसान नहीं है। इसे हमें उस शिक्षक की दृष्टि से समझना चाहिए जो प्रतिदिन बच्चों के साथ तमाम प्रकार की चुनौतियों का सामना करता है। ऐसा नहीं है कि सभी शिक्षक बच्चों के साथ कार्य करने में आ रही चुनौतियों से निपटने के लिए दण्ड का प्रयोग करते हैं, लेकिन वर्तमान समय में ऐसे शिक्षक भी मौजूद हैं जो मानते हैं कि बच्चों को सिखाने के लिए दण्ड व दबाव की आवश्यकता होती है। लेख में बच्चों के साथ कार्य करने में आने वाली चुनौतियों, अनुभवों, उदाहरणों व इनसे निपटने के तरीकों को काफ़ी प्रभावी ढंग से उभारा गया है। यह लेख उनके लिए ज़्यादा महत्त्व का है जो बच्चों के साथ कार्य करने की शुरुआत कर रहे हैं साथ ही उन शिक्षकों के लिए भी जो अभी भी पढ़ने-पढ़ाने की पुरानी धारणाओं से ग्रसित हैं। लेख बच्चों के साथ बेहतर सामंजस्य व रिश्ता बनाकर कार्य करने की नई दिशा व नज़रिया प्रदान करता है, और चुनौतियों से निपटने के लिए क्या चुनना है, इसकी एक समझ भी देता है।

अभिषेक शुक्ला, अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन, जनपद पौड़ी गढ़वाल, उत्तराखंड

इस लेख में लेखिका ने कक्षा संचालन के अपने कक्षा-कक्षीय अनुभवों को बख़ूबी दर्ज किया है। कक्षा संचालन की चुनौतियाँ हर शिक्षक के सम्मुख आती हैं। यदि शिक्षक सकारात्मक तरीक़े अपनाकर कक्षा को व्यवस्थित कर पाते हैं तो धीरे-धीरे बच्चे भी सहयोग करने लगते हैं। जैसा कि मीनूजी ने बताया कि 1 से 5 तक गिनती गिनने से बच्चे बैठ जाते थे। अनुशासन के नाम पर बच्चों को डराकर चुप करा देना सही नहीं है। लेखिका ने अपने लेख में यह भी ज़िक्र किया है कि बच्चों के सीखने का वातावरण दण्ड पर आधारित नहीं होना चाहिए। कुल मिलाकर, कक्षा संचालन को बेहतर बनाने में लेखिका द्वारा अपनाए गए तरीक़े अनुकरणीय हैं। इन तरीक़ों का प्रयोग शिक्षकों द्वारा अपनी कक्षाओं में किया जा सकता है।

मोनिका भण्डारी, राजकीय कन्या उच्च प्राथमिक विद्यालय बलड़ोगी, चीण्याली सौंड, उत्तरकाशी, उत्तराखंड

आनुभविक अधिगम के लिए शिक्षकों के प्रयास, ऋषभ कुमार मिश्र, अंक 14

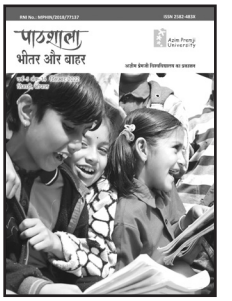

स्कूल भ्रमण के दौरान किसी स्कूल में सीखने-सिखाने की प्रक्रिया का अवलोकन करना और उसे आलेख का आकार देना एक अच्छा और प्रभावी प्रयास है। आलेख में जिस स्कूल का लेखक ने ज़िक्र किया है, उसके बारे में लेख में यह लाइन मुख्य भूमिका निभा रही है : "इस विश्लेषण का केन्द्रीय प्रश्न है कि इस विद्यालय के शिक्षक, विद्यार्थियों के दैनिक अनुभवों और अवलोकनों का कक्षा में किस तरह से उपयोग करते हैं। कक्षाओं के दैनिक चक्र में गृहकार्य की जाँच, कक्षा चर्चा और पुनः गृहकार्य देने का पैटर्न रहता है।" यह लेख स्कूल के इर्द-गिर्द संचालित हो रही कक्षाओं में हो रही शिक्षण प्रक्रिया की झलक दर्शाता है। शिक्षकों ने कक्षा में क्या ठीक किया और क्या ठीक हो सकता था, यानी शिक्षण प्रक्रिया की सकारात्मकता और नएपन के साथ-साथ आलोचनात्मक टिप्पणी भी लेख में दी गई है। जिन शिक्षक साथियों का भ्रमण, इस स्कूल में न भी हो पाए, वे भी यहाँ की शिक्षण व्यवस्था, प्रक्रिया, खोजबीन और पाठ्यपुस्तक के बाहरी जीवन से जुड़ाव को समझ सकते हैं, वह भी बिना परिभाषा रटाए या बताए।

पाठशाला भीतर और बाहर में प्रकाशित 'कक्षा अनुभव' एक प्रयोगशाला का काम करते हैं। शिक्षक और बच्चों के बीच सीखना-सिखाना, सामग्री, पाठ योजना, शिक्षण प्रक्रिया, विश्लेषण, तर्क और निष्कर्ष, यह सब एक विस्तृत नज़रिया बनाते हैं। यह नज़रिया एक सार्थक और बहुआयामी दिशा प्रदान करता है। ये लेख उत्साहपूर्वक और बिना डर के बेहतर सीखने और सीख सकने पर अधिक बल देते हैं। पत्रिका के माध्यम से हमारे सामने शिक्षा के नए-नए मुद्दे, उदाहरण, आदि आते हैं। हम जान पाते हैं कि विभिन्न प्रकार की चुनौतियों के बाद भी शिक्षक और बच्चे आपसी तालमेल से सीख रहे हैं। शिक्षा में कुछ बेहतर करने की ललक एवं तरह-तरह के प्रयासों को एक जगह करके हम तक पहुँचाने के लिए पाठशाला टीम का आभार।

माया मौर्य, अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन, भोपाल, मध्य प्रदेश

विज्ञान, वैज्ञानिक चिन्तन और वैज्ञानिक मानसिकता, हृदयकान्त दीवान, अंक 14

पत्रिका का हर अंक पठनीय होता है। कई बार किसी अन्य विषय पर आधारित होने के चलते किसी अंक को पढ़ने का उत्साह ज़रूर कम हो जाता है, लेकिन एक बार पढ़ना शुरू करो तो लगता है कि किसी शिक्षक के लिए कोई भी विषय असम्बद्ध कैसे हो सकता है! हर बार कुछ नया सीखने करने की प्रेरणा देती है ये पत्रिका। पत्रिका के ताज़ातरीन अंक में प्रस्तुत हृदयकान्त दीवान का लेख, पिछले अंक के गौहर रज़ा के वक्तव्य को आगे बढ़ाता है। उनका लेख वर्तमान सामाजिक

परिदृश्य में वैज्ञानिक चेतना की महत्ता बयान करता है। एक महत्त्वपूर्ण बात बार-बार दोहराई गई है कि प्रश्न पूछना बहुत ज़रूरी है। प्रश्न भले ही अनुत्तरित रह जाएँ, भले इनसे हम असहज महसूस करें, भले ही ये हमारी धार्मिक-सामाजिक आस्थाओं पर प्रश्न चिह्न लगाएँ, प्रश्न पूछने की प्रेरणा रुकनी नहीं चाहिए। एक बढ़ते अलोकतांत्रिक माहौल में जहाँ प्रश्न पूछना किसी अपराध-सा महसूस करवाया जाता है, जहाँ सच कहने पर पहरे लगाए जाते हों, जहाँ प्रश्न खड़े करना और उनके समाधान के प्रयास करना असम्भव-सा लगने लगा है और एक बड़ा तबक़ा अतार्किक होता जा रहा है, ऐसे में यह लेख आशा की एक किरण की तरह शिक्षा और शिक्षालयों में इस बात की पैरवी करता है कि केवल यहीं और यहीं ये मानवीय स्वाभाविक जिज्ञासा शान्त हो सकती है और इसे प्रोत्साहित किया जा सकता है। उनका कहना है कि तार्किक समाज ही विकासोन्मुख हो सकता है, और प्रश्न होंगे तो ही आने वाला समाज समाधान की ओर अग्रसर होगा।

सुन्दर 'शिक्षार्थी', सहायक अध्यापक विज्ञान, राइका कोटधार गमरी, ज़िला उत्तरकाशी, उत्तराखंड

पूर्व-प्राथमिक कक्षाओं में थीम-आधारित शिक्षण, पारुल बत्रा दुग्गल, अंक 14

इस लेख में पूर्व-प्राथमिक कक्षाओं में थीम-आधारित शिक्षण के अन्तर्गत जो प्रयास शिक्षण हेतु सुझाए गए हैं, वे काफ़ी सराहनीय हैं। आनुभविक अधिगम के अन्तर्गत कई प्राइवेट स्कूल विभिन्न विषयों को एक साथ थीम के माध्यम से पढ़ा रहे हैं। यदि हमारे बच्चे पूर्व-प्राथमिक स्तर से थीम पर कार्य करेंगे तो बड़ी कक्षाओं में भी थीम और आनुभविक अधिगम की समझ के साथ पढ़ना-पढ़ाना सहज होगा।

वास्तविक जीवन में हम किसी एक विषय पर कार्य नहीं करते हैं। कोई भी कार्य अन्य विषयों को मिलाकर ही पूर्ण हो पाता है। उसमें अलग-अलग विषय और उनकी वास्तविक समझ सम्बन्धी ज्ञान और कौशल का उपयोग होता है।

शिक्षण हेतु किसी थीम का उपयोग करने की स्थिति में बच्चों को, एक साथ कार्य करने, उस विषय के बारे में सोचने, उसमें किन-किन वस्तुओं का उपयोग करना है और उनको कहाँ से प्राप्त किया जा सकता है, आदि के बारे में जानने-समझने के अवसर प्राप्त होते हैं।

अच्छे लेखों के लिए पाठशाला की पूरी टीम को बधाई।

ताज फ़राह ख़ान, शिक्षक, शासकीय माध्यमिक शाला शहीद नगर, भोपाल, मध्य प्रदेश

यह लेख काफ़ी रोचक लगा। 3 से 6 वय वर्ग के बच्चों के साथ कक्षा 1-2 में 'थीम-आधारित शिक्षण' किया जाना चाहिए। इससे बच्चों को बोलने, सुनने और सुनकर बोलने के अधिक अवसर मिलेंगे। शिक्षण रोचक होने के कारण बच्चों में सीखने की क्षमता का विकास होगा। मुझे यह लेख अच्छा लगा और मैं नए शिक्षण सत्र से अपने विद्यालय में थीम-आधारित शिक्षण पद्धति से पढ़ाने का प्रयास करूँगी।

ममता वर्मा, जीपीएस, बिलासपुर, भीमताल, ज़िला नैनीताल, उत्तराखंड

दो दुनियाओं का अबूझ संवाद, अमित कोहली, अंक 14

एनसीईआरटी की प्राथमिक कक्षाओं की हिन्दी की पाठ्यपुस्तकों को देखते हुए अकसर मेरे मन में जो सवाल उठते थे, उन्हें इस आलेख में रेखांकित किया गया है। पहली से पाँचवीं तक की

हिन्दी की पाठ्यपुस्तक *रिमझिम* में कई तस्वीरें और चित्रकथाएँ ऐसी मालूम पड़ती हैं जो अब ग्रामीण परिवेश में भी बमुश्किल ही देखने को मिलती हैं। ऐसा लगता है कि ग्रामीण परिवेश के नाम पर एक स्टीरियोटाइप छवि प्रस्तुत की जा रही है। लेखक आलेख में इसपर विस्तार से बात करते नज़र आते हैं। *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005* बच्चों के स्कूली जीवन को सन्दर्भों व परिवेश से जोड़ने की अनुशंसा करती है, लेकिन ऐसा लगता है कि पाठ्यपुस्तकों में इस अनुशंसा को बहुत यांत्रिक तौर पर अपनाने की कोशिश की गई है। आलेख में कहा गया है, "ग्रामीण जीवन का जो चित्रण और वर्णन पाठ्यपुस्तकों में होता है, वह नितान्त काल्पनिक और एकरूपता लिए होता है।" इस सन्दर्भ में देखें तो *एनसीएफ़* की अनुशंसाओं का पालन पाठ्यपुस्तक निर्माण से जुड़े लोगों के लिए एक बोझिल ज़िम्मेदारी-सा लगता है जिसका वे येन केन प्रकारेण निर्वहन करते हैं।

तारेंद्र किशोर, अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन, हरिद्वार, उत्तराखंड

इस लेख में अहम विषय पर तथ्यों के साथ बात की गई है। विमर्श के केन्द्र में ऐसे महत्त्वपूर्ण विषय होने ही चाहिए अन्यथा हम सांस्कृतिक विविधता का फूटा ढोल बजाते रहेंगे।

यह लेख विमर्श के रूप में विचारों को एक दिशा देता हुआ दिखा, जहाँ कोरा विमर्श नहीं है, अपितु तथ्य और उदाहरण भी हैं। सिर्फ़ महाराष्ट्र ही नहीं, मध्य प्रदेश की किताबों में एक वर्ग या संस्कृति का ग़ायब होना दिखता है।

शायद सन्तुलन की अवस्था रहनी चाहिए, ताकि हरेक बच्चे को अपनी किताबों में उनका परिवेश और तस्वीर देखने को मिल पाए। साथ ही वे कोसों मील दूर उन्हीं के हमउम्र साथियों की संस्कृति और परिवेश से परिचित हो सकें, उनकी कल्पना कर सकें।

एक अच्छे लेख हेतु बधाई।

विशाल पालीवाल, अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन, ज़िला दमोह, मध्य प्रदेश

यह अंक स्कूल के भीतर और बाहर से जुड़े विविध मुद्दों पर विचार-विमर्श करने और शिक्षा के कक्षा-कक्षीय व वृहद उद्देश्यों को प्राप्त करने के कई व्यवहारिक तरीक़ों और प्रक्रियाओं पर सटीक संवाद स्थापित करता है। अमित कोहली का लेख पाठ्यपुस्तकों के निर्माण की प्रक्रिया और लेखकों की सांस्कृतिक-स्थानीय विविधता के प्रति उपेक्षा भाव को दर्शाता है। आलेख पुस्तक निर्माण की प्रक्रिया के लोकतांत्रीकरण का पक्ष लेता है, ताकि ग्रामीण और जनजातीय वर्ग के बालक भी पाठ्यपुस्तकों में अपने अस्तित्व और मौजूदगी को अनुभव कर सकें।

इसी अंक में प्रकाशित आलेख 'पूर्व-प्राथमिक कक्षाओं में थीम-आधारित शिक्षण' में लेखिका पारुल बत्रा दुग्गल औपचारिक शिक्षण की प्रारम्भिक अवस्था में ध्यान रखने वाली सावधानियों और तैयारियों की उपयोगी जानकारी देती हैं। इसी प्रकार, मीनू पालीवाल का लेख, 'कक्षा संचालन : चुनौतियाँ और चुनाव', बच्चों के साथ कार्य को व्यवस्थित ढंग से और उनके सहयोग से कैसे किया जाए, इस बारे में बताता है। अलका तिवारी के आलेख 'खुले प्रश्नों के खुले जवाब' में उन शिक्षण पद्धतियों की चर्चा है जो बालकों को चिन्तन करने, अनुमान लगाने और तर्क करने के मौक़े देती हैं।

कुल मिलाकर, यह अंक शिक्षा के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए स्कूल के भीतर और बाहर, दोनों क्षेत्रों में कार्य करने और अन्तर्सम्बन्ध बनाने के तरीक़ों की जो जानकारियाँ साझा करता है, वह अत्यन्त व्यवहारिक एवं उपयोगी होने के साथ ही अनुभवपरक हैं।

अर्चना अरोड़ा, अध्यापिका, राज. उ. प्रा. वि., ग्वार ब्राह्मणान्, सांगानेर, ज़िला जयपुर, राजस्थान

'पोंगल' के बहाने असमानता और भेदभाव की चर्चा, माया मौर्य, अंक 14

अंक 14 में माया मौर्य और पारुल बत्रा दुग्गल के लेख बड़ी बारीक़ी और विस्तार से लिखे गए हैं।

आलेख पढ़ने से पहले, पोंगल को मैं एक भरे-पूरे त्योहार के रूप में देखता था। इस आलेख ने मुझे पोंगल को देखने का नया नज़रिया दिया है। इस समीक्षा और अनुभव के बाद *पोंगल* किताब की तलाश में हूँ।

पारुल बत्रा दुग्गल का आलेख कक्षा के विविध अन्तरालों को जीवन्त और चरण-दर-चरण दिखाता है। इस आलेख के आरम्भ में 'थीम' शब्द को बड़े ही सरल रूप में समझाया गया है। लेखिका द्वारा स्पष्टता व अनुभव से बताना कि इस आयु का कोई भी बच्चा 10-15 मिनट से अधिक नहीं बैठ पाता, बड़ी महत्त्वपूर्ण बात है जो आम शिक्षिका-शिक्षक, अन्य कार्यकर्ता या पालक नहीं समझ पाते। इसी आलेख में दी गई तालिका में दिनवार गतिविधियों का ज़िक्र है, यदि यह तालिका थोड़ी बड़ी होती तो पढ़ने में और सहजता होती।

फ़ैज़ कुरेशी, अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन, ज़िला भोपाल, मध्य प्रदेश

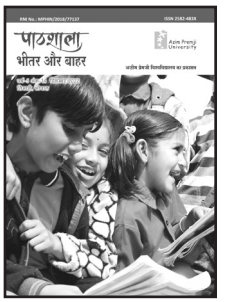

पाठशाला का यह अंक अपने-आप में ढेर सारी शिक्षण सामग्री समेटे हुए है। किताब *पोंगल* के ज़रिए जहाँ सामाजिक कुरीतियों पर प्रहार किया गया है, वही अंकित शुक्ल के लेख 'भाग से क्यों भागना!' में भाग करने की रोचक विधियों की जानकारी दी गई है। तारेंद्र किशोर के लेख '*डेड पोएट्स सोसायटी*' : कविता के ज़रिए शिक्षा के व्यापक उद्देश्यों को उभारती फ़िल्म' में कविता को समझने के मनोवैज्ञानिक तरीक़े पर बात की गई है। शिक्षक जॉन किटिंग के प्रयोग पर बनी ये फ़िल्म कविता को अपने ढंग से समझने का एक दृष्टिकोण विकसित करती है।

निस्सन्देह, शिक्षा में हो रहे विभिन्न प्रयोगों को अपने पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करने की दृष्टि से यह अंक बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

सुमन बिष्ट, राजकीय प्राथमिक विद्यालय हाज्यावाला, ब्लॉक सांगानेर (शहर), ज़िला जयपुर, राजस्थान

साक्षात्कार, अंक 14

पाठशाला के सभी अंक बेहतरीन होते हैं। मैंने पत्रिका के कई अंक पढ़े हैं। उनमें आए आलेख हमें मात्र जानकारी ही नहीं देते, वरन् कार्य पद्धति भी सिखाते हैं। आलेखों की मदद से सभी विषयों के विभिन्न पक्षों को समझने में मदद मिलती है। इन आलेखों से हम हमारे अध्ययन-अध्यापन को सुदृढ़ कर पाते हैं। यह सुदृढ़ता हमें विद्यालय में और बच्चों के साथ कार्य करने में बहुत मददगार होती है। बच्चों के साथ गहरी समझ के साथ काम करके विषयों को उनके अनुकूल बना पाना, पाठ,

पाठ योजना, सीखने के प्रतिफल, टीएलएम, विभिन्न प्रयोग, चित्रों, चार्ट, मॉडल आदि से सम्बन्धित विभिन्न पक्षों को समझ पाना, इस पत्रिका से आसान हो जाता है।

पत्रिका के उक्त अंक में प्रकाशित 'साक्षात्कार' को पढ़कर लगा कि शिक्षा से जुड़े हुए एक व्यक्तित्व से मिलना हुआ है। पढ़कर समझ में आया कि शिक्षक के द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली शिक्षण प्रक्रिया सहज व रुचिकर हो, खेल-खेल में बच्चों को सिखाया जाए और नए वाद्य यंत्रों या कला से बच्चों को अवश्य जोड़ा जाए। शिक्षक के कार्यों का असर बच्चों की उपलब्धियों पर ज़रूर होता है। इससे बच्चे विद्यालय के शैक्षिक वातावरण में अधिक उन्नति कर पाते हैं व अधिक जुड़ाव महसूस कर पाते हैं।

'संवाद' पढ़कर समझ में आया कि समाज किस तरह से विविधता, भेदभाव, सामाजिक नीतियों, समानता, असमानता आदि मुद्दों पर काम करता है। सभी का पक्ष जानकर लगा कि हम भी बहुधा ग़लतियाँ कर देते हैं, जबकि हमें ख़ुद में भी सुधार की आवश्यकता है। इस तरह की समस्याएँ समाज में आम रूप में विद्यमान हैं या यूँ कहें कि समाज का एक हिस्सा हैं। बेहतरीन पत्रिका के लिए साधुवाद।

पूनम भाटिया, प्रधानाध्यापिका, राज. उच्च प्राथमिक विद्यालय बंबाला, सांगानेर, ज़िला जयपुर, राजस्थान

पत्रिका का अंक 14 पढ़कर बहुत अच्छा लगा। इस पत्रिका में दिए शिक्षकों के अनुभव पढ़कर पता चलता है कि बच्चों के साथ कैसा व्यवहार किया जाए, कैसे उनके साथ मान-सम्मान और समझ के साथ रहा जाए और बच्चों के लिए कैसे स्कूल के वातावरण को आनन्दमयी बनाया जाए, ताकि बच्चे स्कूल के लिए घर से ख़ुश होकर आएँ। मैं कक्षा 1 व 2 की शिक्षिका हूँ। मेरा भी प्रयास रहता है कि अलग-अलग नवाचार करके बच्चों को सरल तरीक़ों से पढ़ाऊँ।

श्रीमती संध्या तन्तुवाय, शासकीय प्राथमिक शाला बमुरिया, तहसील पटेरा, ज़िला दमोह, मध्य प्रदेश

खुले प्रश्नों के खुले जवाब, अलका तिवारी, अंक 14

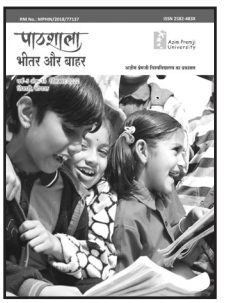

बच्चों के पास सवाल-जवाब का ख़जाना होता है। ज़रूरत सिर्फ़ इस ख़जाने को तलाशने की होती है। लेखिका ने बख़ूबी इसे समझा और इसपर काम किया है। बच्चों से बात करने के लिए जिन प्रक्रियाओं का चयन किया गया वे सभी बातचीत के रास्ते खोलती हैं– ख़ासकर किस्से, कहानियाँ। कहानियों में आए चोर, बिल्ली, कौवा, तोता जैसे किरदारों को बच्चे असल ज़िन्दगी से भी जोड़कर देख रहे थे। अपने अनुभव, तर्क के आधार पर हर पहलू पर उनकी नज़र थी। लेख के एक हिस्से में शामिल ये पंक्तियाँ "लिखित प्रतीकों का तब तक कोई अर्थ नहीं होता जब तक पाठक इन प्रतीकों का अर्थ नहीं समझता" इस लेख की ज़रूरत को उभारती है। इस लेख को मैं अपने अनुभवों से जोड़कर देखती हूँ और इससे इत्तेफ़ाक़ रखती हूँ।

इबारती सवालों पर काम के कुछ अनुभव, मारिया, अंक 14

सीखने के दौरान बच्चों को आ रही मुश्किल के लिए लेखिका ने इसे समझते हुए कक्षा में इसके लिए उपयुक्त विकल्प अपनाए। परिवेश से जुड़ी चीज़ों के साथ सीखना आसानी ही देता है, फिर विषय कोई भी हो वो नया या मुश्किल नहीं होता और इसमें उनकी अपनी भाषा को अगर

जगह दी जाए तब चीज़ें सीधेतौर से बच्चों की पहुँच का हिस्सा हो जाती हैं। यह आलेख इन सभी अनुभवों से जुड़कर पूरा हुआ है। लेखिका को बधाई।

रुबीना ख़ान, मुस्कान, भोपाल, मध्य प्रदेश

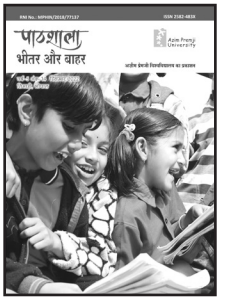

हर अंक की तरह पाठशाला का यह अंक भी रोचक, ज्ञानवर्धक और प्रेरणास्पद है।

इस अंक में विमर्श, परिप्रेक्ष्य, शिक्षणशास्त्र, कक्षा अनुभव, फ़िल्म चर्चा, साक्षात्कार और संवाद के ज़रिए लेखकों द्वारा उम्दा लेखन सामग्री पाठकों तक पहुँचाई गई है।

लेख 'भाग सीखने के तरीक़े' में पूजा ने प्राथमिक शाला के बच्चों को अलग-अलग तरीक़ों से भाग सिखाने का प्रयास किया है। लेखिका कहती हैं कि बच्चों को परिवेश के सन्दर्भों के साथ जोड़कर शिक्षण कार्य करवाया जाए तो वे जल्दी सीखते हैं।

अलका तिवारी के लेख 'खुले प्रश्नों के खुले जवाब' में भाषा शिक्षण के दौरान कहानी, कविताएँ, आदि सुनाकर उनपर चर्चा करने से बच्चों में चिन्तन प्रक्रिया शुरू हो जाती है और बच्चे अपने-अपने अनुभव व राय सबके साथ बाँटने लगते हैं। मारिया का 'इबारती सवालों पर काम के कुछ अनुभव' पढ़कर बहुत सारी समस्याओं का समाधान मिला।

इस अंक के संवाद 'क्या सामाजिक अध्ययन सिर्फ़ रटने का विषय है?' को पढ़कर सामाजिक विज्ञान विषय को पढ़ाने का एक नया नज़रिया मिला। मीनू पालीवाल का लेख 'कक्षा संचालन : चुनौतियाँ व चुनाव' भी काफ़ी अच्छा है।

कुल मिलाकर यह अंक मेरे लिए बेहद ज्ञानवर्धक रहा।

सुमन जैन, अध्यापिका, राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय, ग्वार ब्राह्मणान, ब्लॉक सांगानेर, ज़िला जयपुर, राजस्थान

भाग से क्यों भागना!, अंकित शुक्ल, अंक 14

शिक्षणशास्त्र पर आधारित यह लेख भाग की प्रक्रिया से पहले उसकी अवधारणाओं की स्पष्टता पर बात करता है। इस लेख का सबसे ख़ूबसूरत पहलू यह है कि ये गणित शिक्षण में कहानी की बात करता है। कहानी बच्चों को उत्साह से भर देती है और इस अवधारणा को तोड़ती है कि गणित एक नीरस व बोझिल विषय है। कहानी में बच्चों के वास्तविक अनुभवों का समावेश किया गया है जिससे भाग पर बच्चों के व्यवहारिक ज्ञान की समझ पुख़्ता हो रही है। शिक्षक के सवाल सभी बच्चों की भागीदारी सुनिश्चित कर रहे हैं जिससे गणित की अमूर्तता को काफ़ी हद तक कम किया गया है। यह प्रक्रिया सन्देश दे रही है कि गणित बहुत ही आसान और रोचक विषय है। अंकित बहुत ही सरल एवं रोचक तरीक़े से बच्चों के व्यवहारिक ज्ञान का प्रयोग करते हुए उन्हें भाग की मानक प्रक्रिया की ओर ले गए हैं। आशा है, लेखक आगे भी गणित की अन्य अवधारणाओं पर काम करेंगे एवं हमारे बीच अपने अनुभव साझा करेंगे।

सरोजनी रावत, राजकीय प्राथमिक विद्यालय खारास्रोत, नरेंद्र नगर, उत्तराखंड

लेखकों से आग्रह

पाठकों से प्राप्त सुझाव के आधार पर **पाठशाला भीतर और बाहर** में छपने वाले लेखों की प्रकृति, स्वरूप और प्रस्तुति में कुछ परिवर्तन किए गए हैं। प्रयास है कि पत्रिका ज़मीनी स्तर पर काम कर रहे साथियों के लिए अपने अनुभवों को दर्ज करने, उनको विस्तार और गहराई देने के लिए एक उपयुक्त मंच बने और साथ ही इन अनुभवों को साझा करने का भी। इसी तरह, यह ज़मीनी स्तर पर होने वाले कार्य की दृष्टि से अर्थपूर्ण व कार्य में मददगार भी बन पाएगी। और व्यापक पाठक वर्ग सहित आप व हमारे शिक्षक साथी इसे पढ़ेंगे और इसका अधिकाधिक उपयोग कर पाएँगे।

आपसे आग्रह है कि आप अनुभवों को दर्ज कर पत्रिका में छपने के लिए भेजें। आप स्कूल में, कक्षा में, और अलग–अलग मंचों पर शिक्षकों के साथ किए गए काम के अनुभवों को भेज सकते हैं। आपके साथी शिक्षक भी अपने काम के अनुभवों को भेज सकते हैं। आपके द्वारा भेजे गए लेख बच्चों के सीखने–सिखाने से सम्बन्धित हो सकते हैं, जैसे– विभिन्न विषयों या प्रकरणों को सीखने–सिखाने के अनुभव या फिर शिक्षकों के साथ अन्तर्क्रिया के नए तौर–तरीक़ों पर केन्द्रित या फिर किसी महत्त्वपूर्ण या उल्लेखनीय संवाद के बारे में जो औरों के लिए भी उपयोगी हो। इनके और बहुत–से उदाहरण हो सकते हैं। जैसे– बच्चों के साथ काम के सन्दर्भ में गणित, विज्ञान, भाषा, सामाजिक अध्ययन, आदि किसी भी विषय की किसी भी कक्षा के अनुभव। ये अनुभव किसी अवधारणा को बच्चों को सिखाने, उन्हें गतिविधियाँ कराने या उनके साथ खेल खेलने आदि के हो सकते हैं।

आप, स्कूल और शिक्षकों के साथ (इसमें एंगेज्ड शिक्षक भी शामिल हैं) जो काम कर रहे हैं, उससे सम्बन्धित लेख भी साझा कर सकते हैं। इसमें आपने जो किया उसके साथ–साथ आप अपने काम में किस ख़ास तरह से आगे बढ़े और वह आपने क्या सोचकर किया, इस विचार को शामिल कर सकते हैं। इस दौरान आप अपने काम के सकारात्मक नतीजे व उसमें दिखने वाले गैप भी बताएँ, जैसे– बाल सभा या बाल शोध मेलों में कुछ परिवर्तन किया, तो वह क्या सोचकर किया, उसका क्या नतीजा निकला और बेहतर करने के लिए उसमें और क्या–क्या किया जा सकता है, आदि। इसी तरह, कक्षा में बच्चों को चित्रकला करवाने, कहानी सुनाने या किसी नाटक में भाग लिया, तो उसके बारे में क्या अनुभव रहे, यह बता सकते हैं। गणित का एक उदाहरण शिक्षण सामग्री जैसे– गिनमाला का प्रयोग करके गिनती सिखाने का हो सकता है। इसी तरह वालंटरी टीचर फ़ोरम, टीचर लर्निंग सेंटर, समर–विंटर कैम्प के शैक्षिक प्रयासों आदि के बारे में भी मननशील लेख हो सकते हैं। ये लेख पाठक को यह समझने में मदद करें कि उनमें क्या प्रयास था, किस परिस्थिति में उन्हें सोचा गया, कैसे किया गया, क्या हो पाया, क्या कमी रही, क्या सीखा और आगे के लिए आपके समूह और पाठकों के लिए उसके क्या निहितार्थ हैं?

शिक्षकों के साथ प्रशिक्षण के दौरान, वालंटरी टीचर फ़ोरम में कार्य के दौरान, टीचर लर्निंग सेंटर पर हो रहे प्रयासों में, या उनके साथ सहकारी शिक्षण के दौरान हुए अनुभवों को मननशील व समालोचनात्मक दृष्टिकोण से लिखकर भेजें तो अच्छा रहेगा। इसी तरह, बच्चों अथवा शिक्षकों के साथ कक्षा के बाहर हुए सार्थक अनुभव भी आप मननशील ढंग से लिख सकते हैं।

लेखों के विषय और विषयवस्तु ऐसी हो जिससे फ़ील्ड में कार्य करने वाले साथियों और शिक्षकों को वैचारिक मदद मिलती हो और उनका दक्षता संवर्धन होता हो। लेख ऐसे हों जो स्कूल व कक्षा में पढ़ने–पढ़ाने के तरीक़ों व अन्य गतिविधियों में शिक्षकों व फ़ाउण्डेशन के साथियों द्वारा इस्तेमाल किए जा सकें। साथ ही, ऐसे लेख भी हों जिनसे विविध विषयों एवं उनमें बुनी अवधारणाओं को पढ़ाने

में मदद मिले और उनकी भाषा व विषय सामग्री अधिक–से–अधिक सदस्यों को आसानी से समझ में आने वाली हो।

यदि लेख में दिए गए किसी विवरण, चर्चा अथवा व्याख्या से सम्बन्धित किसी तर्क अथवा प्रमाण के लिए किसी पुस्तक, जरनल या वेब स्रोत से कोई सामग्री ली गई हो तो उसका उल्लेख ज़रूर करें। आप जो भी सन्दर्भ सामग्री लें उससे लेख को अर्थपूर्ण, तार्किक और गुणवत्तापूर्ण बनाने में मदद मिले।

इसके अलावा, आप शिक्षा से सम्बन्धित किसी पुस्तक, फ़िल्म अथवा अन्य शिक्षण सामग्री के बारे में भी लिख सकते हैं, मसलन उनका परिचय, समीक्षा अथवा विश्लेषण।

आशा करते हैं कि आपके यह लेखकीय अनुभव ठोस एवं यथार्थपरक होंगे। उनमें कुछ ऐसा ज़रूर हो जो पाठक को रुचिपूर्ण व सार्थक लगे।

लेखकों को अपने लेखन के सन्दर्भ में किसी भी तरह के सहयोग की आवश्यकता महसूस होती है तो वे इसके लिए सम्पर्क कर सकते हैं। उन्हें सम्पादक मण्डल के सदस्यों द्वारा आवश्यक सहयोग और सुझाव दिए जाएँगे। उम्मीद है कि **पाठशाला भीतर और बाहर** का यह पन्द्रहवाँ अंक आपको अच्छा लगेगा और आप इसके अगले अंकों के लिए ज़रूर लिखेंगे। पत्रिका के इस अंक पर आपकी टिप्पणियों व सुझावों का हमें हमेशा की तरह इन्तज़ार रहेगा।

फॉर्म 4

1. **प्रकाशन का स्थान :** अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन फॉर डिवलपमेंट, प्लॉट नं. 163-164, त्रिलंगा कोऑपरेटिव सोसाइटी, ई-8 एक्सटेंशन, त्रिलंगा भोपाल, मध्यप्रदेश 462039
2. **प्रकाशन की नियत अवधि :** तिमाही
3. **मुद्रक का नाम :** मनोज पी.
   राष्ट्रीयता : भारतीय
   पता : अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय, सर्वे नम्बर 66, बुरुगुंटे विलेज, बिक्कनाहल्ली मेन रोड, सरजापुरा, बेंगलूरु 562125 कर्नाटक
4. **प्रकाशक का नाम :** मनोज पी.
   राष्ट्रीयता : भारतीय
   पता : अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय, सर्वे नम्बर 66, बुरुगुंटे विलेज, बिक्कनाहल्ली मेन रोड, सरजापुरा, बेंगलूरु 562125 कर्नाटक
5. **सम्पादक का नाम :** गुरबचन सिंह
   राष्ट्रीयता : भारतीय
   पता : ई 8 / 103 शिवकुंज रेलवे हाउसिंग सोसायटी, स्टॉप नं. 11 के पास, अरेरा कॉलोनी, भोपाल- 462016 मध्यप्रदेश
6. **उन व्यक्तियों के नाम जिनका स्वामित्व है :**
   स्वामी : अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन फॉर डिवलपमेंट
   पता : प्लॉट नं. 163-164, त्रिलंगा कोऑपरेटिव सोसाइटी, ई-8 एक्सटेंशन, त्रिलंगा भोपाल, मध्यप्रदेश 462039

मैं मनोज पी. घोषणा करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी और विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

तारीख 1 मार्च 2023 **प्रकाशक के हस्ताक्षर**

मुद्रक तथा प्रकाशक मनोज पी. द्वारा अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन फॉर डिवलपमेंट के लिए अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन, प्लॉट नं. 163-164, त्रिलंगा कोऑपरेटिव सोसाइटी, E-8 एक्सटेंशन, त्रिलंगा भोपाल, मध्यप्रदेश 462039 की ओर से प्रकाशित एवं गणेश ग्राफ़िक्स, 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस काम्प्लेक्स, एम.पी. नगर, जोन-1 भोपाल द्वारा मुद्रित।

सम्पादक : गुरबचन सिंह